"विसमाद"

- विसमाद नाद विसमाद वेद । विसमाद जीउ विसमाद भेद । विसमाद रुप विसमाद रंग । विसमाद नागे फिरहि जंत । विसमाद पउण विसमाद पाणी । विसमाद अगनी खेडहि विडाणी । विसमाद धरती विसमाद खाणी । विसमाद सादि लगहि पराणी ।

अर्थः- हे नानक ! ईश्वर की आश्चर्यजनक कुदरत को पूरे भाग्यो से ही समझा जा सकता है इस को देख के मन में कंपन छिड़ रहा है । कई

नाद और कई वेद बेअंत जीव और जीवों के कई भेद जीवों के व अन्य पदार्थों के कई रूप और कई रंग ये सब कुछ देख के विस्माद अवस्था बन रही है । कई जंतु सदा नंगे ही घूम रहे हैं कहीं पवन है कहीं पानी है, कहीं कई अग्नि आश्चर्य खेल खेल रही हैं धरती पे धरती के जीवों की उत्पत्ति की चारों खाणियां ये कुदरति देख के मन में हलचल पैदा हो रही है ।

विसमाद संजोग विसमाद बिजोग । विसमाद भुख विसमाद भोग । विसमाद सिफति विसमाद सालाह । विसमाद उझड़ विसमाद राह । विसमाद नेड़े विसमाद दूरि । विसमाद देखै हाजरा हजूर । वेखि विडाण रहिआ विसमाद । नानक बुझण पूरै भागि ।1।म0-1।

अर्थः- जीव पदार्थों के स्वाद में लग रहे हैं कहीं जीवों का मेल है, कहीं विछोड़ा है कहीं भूख सता रही है, कहीं पदार्थों का भोग है भाव, कहीं कई पदार्थ खाए जा रहे हैं, कहीं कुदरति के मालिक की महिमा हो रही है, कहीं गलत राह है, कहीं राह है ये आश्चर्य देख के मन में हैरानी हो रही है । कोई कहता है कि ईश्वर नजदीक है कोई कहता है कि सब जगह व्यापक हो के जीवों की संभाल कर रहा है इस आश्चर्यजनक करिश्मे को देख के झन्नाहट छिड़ रही है । हे नानक ! इस इलाही तमाशे को बड़े भाग्यों से समझा जा सकता है ।1।

- कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सार । कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकार । कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचार । कुदरति खाणा पीणा पैन्हण कुदरति सरब पिआर । कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ।

अर्थः- हे प्रभु ! जो कुछ दिखाई दे रहा है और जो सुनाई दे रहा है, ये सब तेरी ही कला है ये भव भावना जो सुखों का मूल है, ये भी तेरी कुदरति है । पातालों में आकाशों में तेरी ही कुदरत है, ये सारा आकार भाव, ये सारा जगत जो दिखाई दे रहा है तेरी ही आश्चर्यजनक खेल है । वेद, पुराण और कतेब और भी सारी विचार - सत्ता तेरी ही कला है जीवों का खाना, पीना, पहनना ये विचार और जगत में सारा प्यार का जजबा ये सब तेरी कुदरत है । जातियों में, जिनसों में, रंगों में, जगत के जीवों में तेरी ही कुदरत बरत रही है ।

कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मान अभिमान । कुदरति पउण पाणी बैसंतर कुदरति धरती खाक । सभ तेरी कुदरति तूं कादिर करता पाकी नाई पाक । नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताक । 2 पउड़ी ।

अर्थः- जगत में कहीं भलाई के काम हो रहे हैं कहीं विकार हैं कहीं किसी का आदर हो रहा है कहीं अहंकार प्रधान है ये तेरा आश्चर्य भरा करिश्मा है । पवन, पानी, आग, धरती की खाक आदि तत्व, ये सारे तेरा ही तमाशा हैं । हे प्रभु ! सब तेरी ही कला बरत रही है, तू कुदरत का मालिक है, तू ही इस खेल का रचनहार है, तेरी बड़ाई स्वच्छ से स्वच्छ है, तू स्वयं पवित्र हस्ती वाला है । हे नानक ! प्रभु इस सारी कुदरत को अपने हुक्म में रख के संभाल कर रहा है, और सब जगह अकेला खुद ही खुद मौजूद है ।

- आपीन्है भोग भोगि कै होई भसमड़ि भउर सिधाइआ । वडा होआ दुनीदार गलि संगल घति चलाइआ । अगै करणी कीरत वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ । थाउ न होवी पउदीई हुण सुणीऐ किआ रुआइआ । मनि अंधै जनम गवाइआ ।3।

(1-463-464)

अर्थः- ईश्वर स्वयं ही जीव रूप हो के पदार्थों के रंग भोगता है ये भी उसकी आश्चर्यजनक कुदरत है । शरीर मिट्टी की ढेरी हो जाता है और आखिर जीवात्मा रूप भौरा शरीर को छोड़ के चल पड़ता है । इस तरह का दुनिया के धंधों में फंसा हुआ जीव जब मरता है, इसके गले में संगल डाल के संगली डाल के आगे लगा लिया जाता है भाव, माया ग्रसित जीव जगत को छोड़ना नहीं चाहता और 'हंस चलसी डुमणा'। परलोक में भाव, धर्मराज के दरबार में देखें पौड़ी - 2 ईश्वर की महिमा रूपी कमाई ही स्वीकार होती है, वहाँ जीव के किए कर्मों का हिसाब अच्छी तरह इसे समझा दिया जाता है । माया के भोगों में ही फसे रहने के कारण वहाँ मार पड़ते को कहीं जगह नहीं मिलती, उस वक्त इसकी कोई चीख - पुकार नहीं सुनी जाती । मूर्ख मन वाला जीव अपना मानव जनम व्यर्थ गवा लेता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"